

अव्यक्तलक्षण (अ<sup>०</sup> + ल<sup>०</sup>) und अव्यक्तव्यक्त (अ<sup>०</sup> + व्य<sup>०</sup>) m. Beina-  
men von Çiva Çiv.

अव्यङ्ग (3. अ + व्य<sup>०</sup>) 1) adj. vollgliedrig KĀTJ. ÇA. 6, 3, 21. 7, 6, 14.  
अव्यङ्गाङ्गी M. 3, 10. — 2) f. ०ङ्गा falsche Var. für अद्याष्टा ÇKDr.

अव्यचस् (3. अ + व्य<sup>०</sup>) adj. nicht geräumig AV. 19, 68, 1.

अव्याष्टा f. AK. 2, 4, 3, 5, v. 1. für अद्याष्टा.

अव्यति (von अम्) f. Sättigung, Befriedigung oder Begierde: त्रिः स्म  
माङ्गः अथवा वैत्सेनात् स्म मे ऽव्यत्यै पृणासि RV. 10, 95, 4.

अव्यथ (von 3. अ + व्यथा) 1) adj. frei von Pein MED. th. 15. — 2) m.  
Schlange ebend. — 3) ०या N. zweier Pflanzen: a) Terminalia citrina  
Roxb., ein Baum, AK. 2, 4, 3, 39. TAİK. 3, 3, 194. MED. — b) Hibiscus  
mutabilis L., ein Zierstrauch, AK. 2, 4, 3, 11. MED. — Vgl. अव्यथा.

अव्ययमान (3. अ + व्य<sup>०</sup>) adj. nicht wankend VS. 11, 63. 13, 16. 14, 11.

अव्यथा (3. अ + व्यथा) f. Schwankungslosigkeit VS. 10, 21. 15, 10. —  
Vgl. अव्यथ 3.

अव्यथि (3. अ + व्य<sup>०</sup>) 1) adj. nicht wankend, sicher schreitend, un-  
verzagt: प्रोळ्हेः समुद्रमव्यथिर्गन्वान् RV. 4, 117, 15. (रथि) सुपथो अ-  
व्यथिर्भूत् 9, 48, 3. Beiw. der Rosse der Açvin (vgl. NAIGH. 1, 14): (भु-  
ज्यम्) उद्देक्षुरासि अव्यथिभिः । पत्त्रिभिश्चमैरव्यथिभिः 7, 69, 8. भुज्यु  
याभिरव्यथिभिर्निजिन्वथुः 1, 112, 6. — 2) f. sicherer Gang, Unverzagt-  
heit: तदेव्यथी त्रिमाणास्तरति RV. 10, 27, 21. यो वेदिष्ठा अव्यथिषष्ठा-  
वतं त्रितुभ्यः (वाजम्) 8, 2, 24. 10, 31, 10. SV. II, 2, 2, 3 (Var. zu RV. 9,  
48, 3).

अव्यथिन् (3. अ + व्य<sup>०</sup>, das allein nicht im Gebrauch sein soll) adj.  
P. 3, 2, 157.

अव्यथिष (3. अ + व्य<sup>०</sup>) 1) m. a) Sonne Uṇ. 1, 49. TAİK. 1, 1, 98. — b)  
Meer Uṇ. — 2) ०षी f. a) Nacht Uṇ. Mitternacht ÇKDr. WILS. — b)  
Erde Uṇ.

अव्यथिष्यै (3. अ + व्य<sup>०</sup>) ved. inf. P. 3, 4, 10.

अव्यथ्य (3. अ + व्य<sup>०</sup>) P. 3, 1, 114. Vop. 26, 20. adj. unerschütterlich  
RV. 2, 35, 5. राष्ट्रम् AIR. Br. 7, 31.

अव्यनत् (3. अ + व्य<sup>०</sup> von अन्) adj. nicht athmend, leblos RV. 10,  
120, 2.

1. अव्यय (von अवि) adj. f. ई vom Schaf herrührend: रोमाणि RV. 1,  
135, 6. वारे 9, 36, 4. 67, 4. 69, 4. पवित्रम् 66, 28. गव्ययी लग्भवति नि-  
र्षिगव्ययी 70, 7. 16, 6 und sonst. Abweichend betont 86, 34: पवमान  
मक्षणी वि धावसि स्रोत न चित्रा अव्ययानि पय्या. — Vgl. अव्य.

2. अव्यय (3. अ + व्यय) 1) adj. f. आ keinem Wechsel unterworfen,  
gleichmässig fortdauernd, unvergänglich H. an. 3, 478. MED. j. 68. KA-  
THOP. 3, 15. MUNP. UP. 1, 1, 6. ÇYETĀÇY. UP. 3, 12. M. 1, 18. 19. 57. 2, 81. 8,  
344. BHAG. 2, 17. 34. 4, 1. 6. 13. 7, 24. 25. 13, 5. 17. ANĀ. 6, 1. N. 2, 14. R.  
1, 2, 28. 31, 19. 2, 101, 28. 3, 10, 14. 5, 3, 24. 89, 37. VIÇY. 12, 6. 15, 4. —  
2) m. = परमेश्वर H. an. 3, 478. Viṣṇu MED. j. 68. Çiva TAİK. 1, 1, 45.  
ÇIV. — 3) N. pr. ein Sohn des Manu Raivata HARIV. 433. — 4) m. n.  
SIDDH. K. 249, a, ult. ein Indeclinabile P. 1, 1, 37. 2, 1, 6. 2, 11. 3, 69. 4,  
82. 4, 2, 104. 6, 2, 2. AK. 3, 4, 241. 6, 34. 46. H. 23. an. MED. सदृशं त्रिषु  
लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु । वचनेषु च सर्वेषु यत् व्यति तदव्ययम् ॥ KĀr.  
in P. II, 414. fg.

अव्ययत् (von अव्यय) n. Unvergänglichkeit: विद्यायाः HR. Pr. 4, v. 1.  
für अतयत्.

अव्ययीभाव (von अव्यय + भू) m. eine adverbiale Zusammensetzung,  
die keinem Wechsel der Flexion mehr unterworfen ist, P. 1, 1, 41. 2, 1, 5.  
4, 18. 83. u. s. w. AK. 3, 6, 26. अव्ययीभावसमास P. 1, 1, 41, Sch.

अव्याहारिन् (3. अ + व्या<sup>०</sup>, das allein nicht im Gebrauch sein soll)  
adj. gaṇa प्राह्यादि.

अव्युष्ट (3. अ + व्युष्ट) adj. noch nicht leuchtend, von den Morgenrö-  
then RV. 2, 28, 9.

अव्युद्धि (3. अ + व्युद्धि) f. das Nichtmisslingen AV. 10, 2, 10.

अव्योष्यत् (3. अ + व्यो<sup>०</sup> von इ) adj. nicht verschwindend, sich nicht  
verlierend AV. 12, 4, 9.

अव्रण (3. अ + व्रण) adj. ohne Einrisse, Narben, Splitter VS. 40, 8.  
दत्तपवनम् SUÇR. 2, 135, 18. यूपम् KĀTJ. ÇA. 6, 1, 8. द्वाडाः M. 2, 47. अव्रणं  
शुक्रम् heisst eine Augenkrankheit SUÇR. 2, 311, 13. 20. 329, 3; vgl. शुक्र.

अव्रत (3. अ + व्रत) adj. gesetzlos, ungehorsam, ruchlos: सुव्रतो र-  
न्धया कं चिद्व्रतम् RV. 1, 132, 4. दस्युम् 175, 3. 9, 41, 2. व्रतैः सीदन्ता अ-  
व्रतम् (vgl. P. 6, 1, 116) 6, 14, 3. 1, 33, 5. 31, 8. 101, 2. 9, 73, 5. AV. 6, 20,  
1. 7, 116, 2. SV. I, 4, 1, 4, 6. 5, 2, 4, 5. der die religiösen Obliegenheiten  
nicht erfüllt M. 3, 170. 10, 20. 12, 114. R. 1, 13, 23.

अव्रतिक (3. अ + व्र<sup>०</sup>) adj. dass. INDR. 2, 5.

अव्रत्य (von अव्रत) n. Verstoß gegen die asketische Regel: य आहि-  
तामिरुपवसे ऽव्रत्यापद्येत AIR. Br. 7, 8. ÇAT. Br. 3, 2, 3, 24. 4, 3, 2. KĀTJ.  
ÇA. 7, 3, 2. अव्रत्यापचारः ĀÇV. GAṆJ. 12, 8.

अव्राजिन् (3. अ + व्रा<sup>०</sup>, das allein nicht vorkommen soll) adj. gaṇa  
प्राह्यादि.

अव्रात्य (3. अ + व्रा<sup>०</sup>) m. ein Nicht-Vrāja AV. 15, 13, 6.

अव्रीड (von 3. अ + व्रीडा) m. N. pr. gaṇa राजन्यादि zu P. 4, 2, 53.

अर्व (Uṇ. 4, 110 = अस् und अम्बु.

1. अर्म् (अर्म्), अर्म्नाति und अर्म्भते; potent. अर्म्भाम्, अर्म्भयि, अर्म्भमिहि;  
imperat. अर्म्भ; imperf. 3. sg. अर्म्भ, pl. अर्म्भत, du. अर्म्भाथे, अर्म्भाते (nach  
dem Metrum: अर्म्भये, अर्म्भते); aor. अर्म्भत्, अर्म्भिषुम् (hierher nach DEVAR.  
अर्म्भिषः NAIGH. 3, 21); अर्म्भत् NAIGH. 2, 18. अर्म्भे; अर्म्भन्, अर्म्भयाम्; अर्म्भामहे  
RV. 8, 27, 22; अर्म्भिषत् 3. pl. (BHAT. 15, 43); perf. अर्म्भ, अर्म्भुस्; अर्म्भे; अर्म्भ-  
नर्म् (P. 7, 4, 72. Vop. 8, 53. 12, 6), अर्म्भुस्; अर्म्भे, अर्म्भारे; part. perf.  
अर्म्भान्; fut. अर्म्भिष्यते; अर्म्भिता oder अर्म्भिता Vop. 8, 79; inf. अर्म्भितुम्. In  
der klass. Sprache nur med. 1) erreichen, anlangen —, eintreffen bei:  
सद्यो अस्याधनैः पारमेश्वर RV. 5, 34, 10. अर्म्भमिहि गाधमुत् प्रतिष्ठाम् 47, 7.  
अर्म्भामायिषि सुधितानि पूर्वा 2, 27, 10. इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः 7, 84, 5.  
तप्ता घमा अर्म्भुवते विसर्गम् erreichen ihr Ende 103, 9. यं जीवमर्म्भवामहे  
10, 97, 17. को देवयत्तमर्म्भवत् 1, 40, 7. 52, 14. 116, 25. 121, 16. 163, 10. 7,  
63, 2. 10, 126, 1. ततो मा ऋविषामष्टु VS. 8, 60. 7, 3, 6. ÇAT. Br. 6, 3, 4, 20. 12, 9,  
3, 13. यद्वाति गयास्थश्च सर्वमानन्त्यमर्म्भते reicht für die Ewigkeit aus  
JĀĀN. 1, 260. — 2) erlangen, in den Besitz einer Sache kommen: अर्म्भु-  
त्वमानशुः RV. 1, 164, 23. अर्म्भं ज्योतिर्यस्याम् 2, 27, 11. ऋविषाण्याशत् 21,  
5. इन्द्रं नरो बुबुधाना अर्म्भे 5, 30, 2. यस्तै अर्म्भे सुमतिं मतो अर्म्भत् 10, 11, 7.  
1, 164, 37. 7, 47, 2. 8, 47, 6. 10, 96, 7. VS. 3, 18. 4, 18. 7, 47. 8, 10. 62. 38, 28. 39, 4.  
देवा अर्म्भतानशानाः AV. 2, 1, 5. स्वैरानशानाः 6, 47, 3. नहि ते अर्म्भे तन्वः